FYUGP

SANTALI HONOURS/ RESEARCH

FOR UNDER GRADUATE COURSES UNDER RANCHI UNIVERSITY

Implemented w.e.f.
Academic Session 2025-26 & onwards

स्नातकोत्तर संताली विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची
University Department of Santali, Ranchi University, Ranchi

पत्रांक ..... दिनांक 29.08.2025

Members of board of studies for the syllabus of four-years undergraduate programme (FYUGP) of NEP2020

आज दिनांक 29.08.2025 को अपराह्न 1:00 बजे स्नातकोत्तर संताली विभाग में विभागाध्यक्ष प्रेम मुर्मू की अध्यक्षता में संताली (NEP चार वर्षीय) स्नातक पाठ्क्रम के सम्बन्ध में पाठ्क्रम समिति (BOS) की एक बैठक सम्पन्न हुई। इस बैठक में निम्नलिखित सदस्य उपस्थित हुए, जिनका नाम निम्नवत् है:–

पाठ्क्रम समिमि के सदस्यगन :

1. डॉ० कृष्ण चन्द्र टुडू (~~सहायक~~ एसोसिएट प्राध्यापक) 29/08/2025
   संत जेवियर कॉलेज, राँची (R.U.)
2. राज कुमार बास्की (सहायक प्राध्यापक) 29.08.2025
   स्नातकोत्तर संताली विभाग (R.U.)
3. शकुंतला बेसरा (N.B.) 29/08/2025
   स्नातकोत्तर संताली विभाग (R.U.)
4. फ्रांसिस सी० मुर्मू (सहायक प्राध्यापक) 29/08/2025
   गोस्सनर कॉलेज, राँची (R.U.)

उक्त बैठक में सर्वसम्मति से पाठ्क्रम को स्वीकृति प्रदान की गई तथा यह निर्णय लिया गया कि पाठ्क्रम को विश्वविद्यालय भेजा जाय।

29/08/2025
विभागाध्यक्ष
H.O.D.
University Department of Santali
R.U., Ranchi

संताली स्नातक पाठ्यक्रम का उद्देश्य

संताली स्नातक पाठ्यक्रम का उद्देश्य निम्नांकित लक्ष्यों को प्राप्त करना है ।

1. संताली साहित्य का अध्ययन प्रस्तुत करना।
2. संताली भाषा, साहित्य और समाज को समझने में लोगों को मदद करना।
3. नई पीढ़ी को संताली साहित्य की ओर प्रेरित करना।
4. संताली साहित्य के रचनाकारों को समाज में प्रतिष्ठित करना और उनके कृतियों को प्रकाश में लाना।
5. संताली साहित्य के महत्व और प्रतिष्ठा में वृद्धि करना।
6. संताली साहित्य का संकलन, संचयन, प्रकाशन और मूल्यांकन को दिशा देना।
7. विद्यार्थियों को कुशल, संवेदनशील और जिम्मेवार नागरिक बनाना।
8. भाषा संबंधी कौशल का विकास करना।
9. उच्चारण, वर्तनी और लिपि का सही ज्ञान कराना।
10. मूलभूत कौशल यथा लेखन, श्रवण और अभिव्यक्ति कला को विकसित करना।
11. एक कुशल वक्ता का निर्माण करना।
12. विभिन्न साहित्यिक विधाओं की जानकारी देना।
13. स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर तक के विभिन्न विशिष्ट साहित्यों से परिचित कराना।
14. समाज और समुदाय के प्रति संवेदनशील दृष्टि का विकास करना।
15. समाज के विभिन्न समुदायों के प्रति सहिष्णुता एवं मैत्रीपूर्ण भावना का विकास करना।
16. मानवीय मूल्यों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करना।
17. साहित्य में राष्ट्र और राष्ट्रवाद के सही अर्थों को बताना।
18. राष्ट्रीय चेतना का विकास करना।
19. भाषिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक विरासतों को राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में स्थापित करते हुए समानता का अवसर प्राप्त करना ।

संताली स्नातक पाठ्यक्रम का अधिगम परिणाम

स्नातक संताली (प्रतिष्ठा) कार्यक्रम से संबद्ध अधिगम परिणाम इस प्रकार है :-

1. साहित्य संप्रेषण के आधार बिंदुओं की जानकारी देना ताकि साहित्य के सम्बन्ध में स्पष्ट समझ विकसित हो सके।
2. संताली साहित्य और भाषा का व्यवस्थित और तर्कसंगत ज्ञान कराना ताकि उसके सैद्धांतिक पक्ष और साहित्यिक विकास के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी मिल सके।
3. साहित्य की विभिन्न विधाओं को पढ़ने और समझने की योग्यता का विकास करना ।
4. साहित्य लेखन की विविध शैली और समीक्षात्मक दृष्टि का विकास करना
5. स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक सांस्कृतिकता के वृहद संजाल के बारे में जानकारी देना ताकि विद्यार्थी में साहित्यिक मूल्यांकन की योग्यता विकसित हो सके।
6. समीच्य दृष्टि और व्यवस्थित वैचारिकी का प्रर्दशन करना जिससे संताली साहित्य के अध्ययन के प्रति जिज्ञासा और प्रश्न उत्पन्न हो सके।
7. आधुनिक संदर्भ में तकनीकी संसाधनों को इस्तेमाल करते हुए संताली साहित्य की जानकारी देना।
8. प्रत्येक स्तर पर जीवन के मूल्यों और साहित्यिक मूल्यों का निर्धारण करने की क्षमता और ज्ञान का विकास करना ।
9. विद्यार्थी में श्रवण, लेखन और वचन के साथ-साथ कल्पनाशक्ति का विकास करना जिससे कि उसके समग्र व्यक्तित्व में निखार आ सके।
10. साहित्य के अध्ययन के बाद रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों की पहचान करते हुए रोजगार के नए मार्ग को तलाशना।
11. वर्तमान युग सूचना क्रांति का युग है जिसमें अभिव्यक्ति की प्रधानता है ऐसे में तकनीकी के विकास ने साहित्य संचरण को अत्यंत सुगम बना दिया है इसी के परिपेक्ष्य में संताली साहित्य लेखन और अनुवाद का मंच प्रदान करना जिसका उपयोग कर जनसंचार सं लेकर व्यक्तित्व विकास तक में विद्यार्थी निष्णात हो सके। विद्यार्थी की रूचियों को एक व्यवस्थित रूप देना और उन्हें विभिन्न विधाओं में से चयन की स्वतंत्रता प्रदान करना ताकि वे स्नातक पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद खुद ही साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में से अपनी रूचि के अनुसार चयन कर सकें।
12. भारत के साहित्यिक, सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को जानने के प्रति जागरूकता पैदा करना।
13. भारतीय साहित्य के वाङमय में संताली भाषा को स्थापित करना ।
14. मातृभाषा, मातृभूमि की सेवा प्रेम को अटूट बनाना ।

ग्रामीण एवं शहर के विद्यार्थियों को शैक्षणिक एवं साहित्यिक दृष्टिकोण से मजबुत बनाते हुए राष्ट्रीय एकता की भावना से जोड़ना ।

Non-Practical Subject : Santali

Semester	Courses		Examination Structure			
	Code	Papers	Credits	Mid Semester Theory (F.M.)	End Semester Theory (F.M.)	End Semester Practical/ Viva (F.M.)
I	SEC-1	संताल जनजाति की पारम्परिक कलाएं एवं कौशल निर्माण	3	---	75	---
	MJ-1	संताली भाषा एवं साहित्य का इतिहास	4	25	75	---
II	SEC-2	रचनात्मक लेखन	3	---	75	---
	MJ-2	झारखण्ड की जनजातीय संस्कृति	4	25	75	---
III	SEC-3	Elementary Computer Application Softwares	3	---	75	---
	MJ-3	संताली व्याकरण	4	25	75	---
	MJ-4	सामान्य लोक साहित्य	4	25	75	---
IV	MJ-5	IKS (भारतीय ज्ञान परम्परा)	4	25	75	---
	MJ-6	संताली लोक साहित्य	4	25	75	---
	MJ-7	संताली लोकगीत एवं लोककथा	4	25	75	---
V	MJ-8	सामान्य भाषा विज्ञान	4	25	75	---
	MJ-9	संताली एवं प्रकीर्ण साहित्य	4	25	75	---
	MJ-10	संताली कहानी	4	25	75	---
	MJ-11	संताली साहित्यिक निबंध	4	25	75	---
VI	MJ-12	संताली नाटक	4	25	75	---
	MJ-13	संताली कवि एवं उनके काव्य	4	25	75	---
	MJ-14	साहित्य सिद्धांत	4	25	75	---
	MJ-15	आदिवासी साहित्य	4	25	75	---
VII	MJ-16	शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया	4	25	75	---
	MJ-17	संताली उपन्यास	4	25	75	---
	MJ-18	संताली साहित्यकार एवं उनकी कृतियां	4	25	75	---
	RC-1	अनुसंधान योजना एवं तकनीक	4	25	75	---
	AMJ-1	झारखण्ड के महापुरुष एवं आदि विरासत	4	25	75	---
VIII	MJ-19	अनुवाद विज्ञान	4	25	75	---
	MJ-20	संताली भाषा विज्ञान	4	25	75	---
	AMJ-2	झारखण्डी कानून एवं स्वशासन व्यवस्था	4	25	75	---
	AMJ-3	पारम्परिक ज्ञान एवं तकनीकी	4	25	75	---
	RC-2	लघुशोध प्रबंध/इन्टर्नशिप/फील्ड वर्क	8	50	---	150

Minor Courses		Examination Structure			
Code	**Papers**	**Credits**	**Mid Semester Theory (F.M.)**	**End Semester Theory (F.M.)**	**End Semester Practical/ Viva (F.M.)**
MN-1A	परिचयात्मक संताली	4	25	75	---
MN-1B	संताल जनजाति के संस्कार	4	25	75	---
MN-1C	संताल जनजाति के पर्व-त्यौहार एवं आभूषण	4	25	75	---
MN-1D	भारत की जनजातीय संस्कृति	4	25	75	---
MN-E	संताली लोक साहित्य	4	25	75	---
MN-F	झारखण्ड के पारम्परिक वाद्ययंत्र, नृत्य, षैलीयाँ	4	25	75	---
MN-G	झारखण्ड के पारम्परिक पाक कला एवं औषधीय ज्ञान	4	25	75	---

Semester	Elective Courses		Examination Structure			
	Code	**Papers**	**Credits**	**Mid Semester Theory (F.M.)**	**End Semester Theory (F.M.)**	**End Semester Practical/ Viva (F.M.)**
III	AEC-3	लेखन एवं प्रारूपण	2	---	50	---
IV	AEC-4	संताली वाक् कला एवं सम्प्रेषण	2	---	50	---

SEMESTER I

SKILL ENHANCEMENT COURSE- SEC 1:

संताल जनजाति की पारम्परिक कलाएं एवं कौशल निर्माण

Marks: 75 (ESE: 3Hrs) = 75	Pass Marks: Th (ESE) = 30

(Credits: Theory-03) **Theory: 45 Hours**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों में कला के विविध पक्ष यथा कला का अर्थ, कला का महत्व, कला की विशेषता आदि से अवगत कराया जायेगा। पारंपरिक खेल की अवधारणा, परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ और महत्व को जान सकेंगे।
2. पारंपरिक खेलों से परिचित होंगे और खेलों को बढ़ावा मिलेगा। संताल जनजातियों के बीच आदिकाल से चली आ रही पारंपरिक कलाओं में निहित मूल्यों, सांस्कृतिक प्रथाओं और विश्वास प्रणालियों को समझा जा सकेगा।
3. इससे वर्तमान में लुप्त हो रही इन पारंपरिक कलाओं को संरक्षित कर विश्व पटल पर स्थापित करने में सहायता मिलेगी।

प्रस्तावित संरचना :- संताल जनजाति की पारंपरिक कलाएं एवं कौशल निर्माण

- इस पत्र के उत्तर हिंदी व अँग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. कला का सामान्य परिचय, कला का अर्थ, परिभाषा, कला का महत्व, पारम्परिक कलाओं की सामाजिक एवं सांस्कृतिक उपयोगिता, पारंपरिक कलाओं की विशेषताएं।

इकाई 2. जनजातीय कलाएं - नृत्य कला, वाद्य यंत्र निर्माण कला, काष्ठ कला, गृह निर्माण कला, चित्र कला (सोहराई कला, कोहबार कला, जादोपटिया कला), मिट्टी कला, बांस कला, सिलाई-बुनाई कला (चटाई, खाट, मचिया, झाड़ू, लेदरा) पारम्परिक औषधीय ज्ञान एवं उपचार कला एवं विभिन्न पकवानों के पाक कलाओं का अध्ययन।

इकाई 2. छुर, बिति, लट्टू, गुटि, तिल-गुटि, लोखा गुटि, चाल गुटि, टुटिगुटि, खो-खो, उकु एनेच्, ओड़ाक्-दुअर, बहु-जांवायं, पिटो, कितकित, दाका-उतु, जोलगुदी, आदि। इन पारंपरिक खेलों का खेल विधि, सामाजिक, सांस्कृतिक, शारीरिक, बौद्धिक एवं अन्य महत्व।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. झारखण्ड की पारंपरिक कलाएं : डॉ. गिरिधारी राम गौंझू
2. झारखण्ड का लोकसंगीत : डॉ. गिरिधारी राम गौंझू
3. झारखण्ड के वाद्ययंत्र : डॉ. गिरिधारी राम गौंझू
4. झारखण्ड के परम्परागत खेल : एम. मोदस्सर

I. MAJOR COURSE –MJ 1:

संताली भाषा एवं साहित्य का इतिहास

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) Theory: 60 Lectures

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. वर्त्तमान समय में जब विश्व एक परिवार के समान एकजुट हो चुका है। ऐसे में संताली भाषा के बारे में विद्यार्थियों को बतलाना जरूरी है।
2. संताली झारखण्ड की द्वितीय राजभाषा है। इस पत्र के माध्यम से छात्रों को जानकारी प्राप्त हो सकेगी।
3. विद्यार्थी संताली भाषा की ऐतिहासिकता, उद्‌भव, विकास, भौगोलिक विस्तार, जनसंख्या एवं साहित्य का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. संताली भाषा के भावगत, भाषागत, शैलीगत आदि विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना :- संताली भाषा एवं साहित्य का इतिहास

- इस पत्र के उत्तर संताली भाषा व देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. संताल जनजाति का सामान्य परिचय, संताल जनजाति का इतिहास, भौगोलिक संरचना एवं निवास क्षेत्र, संताली भाषा का परिचय, नामकरण, जनसंख्या, क्षेत्र-विस्तार, संताली भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, संताली भाषा का विकास, लेखन परम्परा, क्षेत्रीय भिन्नताएं, भाषा और संस्कृति का अन्तः सम्बन्ध, भाषा संरक्षण के उपाय एवं संभावनाएँ।

इकाई 2. संताली साहित्य का उद्‌भव और विकास, ऐतिहासिक परम्परा, साहित्यिक संरचना, वर्गीकरण, काल विभाजन, नामकरण, प्राचीनकाल, मध्य काल एवं आधुनिक कालीन साहित्येतिहास की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक पृष्ठभूमि, गद्य-पद्य का परिचय, संताली साहित्य में सगुण एवं निगुर्ण भक्ति धारा का सामान्य परिचय, संताली साहित्य में प्रकृति चित्रण, मानवीय संवेदना, सामाजिक चिंतन, सांस्कृतिक चिंतन, राष्ट्रीय चिंतन, आंचलिक समस्या, नारी चित्रण, सौंदर्य चित्रण, दर्शन आदि का वर्णन एवं विश्लेषण, संताली साहित्य की प्रवृत्ति, विशेषताएं।

इकाई 3. संताली साहित्य का क्रमिक विकास एवं साहित्यिक समृद्धि, संताली साहित्य के विकास में विदेशी एवं देशी लेखकों का योगदान, पत्र-पत्रिकाओं, विभिन्न सामाजिक संस्थाओं एवं शैक्षणिक संस्थाओं का योगदान, आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा फिल्म की भूमिका।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. संताली भाषा साहित्य का उद्‌भव और विकास : डॉ. कृष्ण चन्द्र टुडू
2. संताली सांवहेंत् रेयाक् नागाम : लोखोन चोंद्रो मुर्मू
3. संक्षिप्त संताली साहित्य : परिमल हेम्ब्रम
4. सानताडी सांवहेत रेनाः ओमोनोम : प्रो (डॉ.) कृष्ण चन्द्र टुडु
5. संताली ओनोल साकामको रेयाक् इतिहास : गब्रीएल सोरेन
6. संताली भाषा-साहित्य से संबंधित विविध पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन।

SEMESTER II

SKILL ENHANCEMENT COURSE- SEC 2:

रचनात्मक लेखन

Marks: 75 (ESE: 3Hrs) = 75	**Pass Marks: Th (ESE) = 30**

(Credits: Theory-03) **Theory: 45 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में भाषा में रूचि एवं मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने में मदद मिलेगी।
2. उनमें कल्पनाशीलता और रचनात्मकता का विकास किया जा सकेगा। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से उन्हें साहित्य की विविध विधाओं और उनकी रचनात्मक शैली का परिचय होगा, जिसमें विद्यार्थी स्वंय भी इन विधाओं में लेखन की ओर अग्रसर हो सकेंगे।
3. संताली भाषा में गीत, कविता, कहानी, नाटक, निबंध, अपन्यास, एकांकी, रेखाचित्र में से किसी एक विधा पर स्व-रचित रचनाएँ अपेक्षित होंगे। यह लेखन लगभग **पचहत्तर** पृष्ठों का होगा।
4. रचनात्मक लेखन का मूल्यांकन निम्नलिखित बिन्दुओं के तहत किया जा सकता है :- गीत, कविता-बिम्ब, प्रतीक, अलंकार, रस, छंद, मुहावरे, लोकभाषा, लोक जीवन, प्रकृति चित्रण आदि पर आधारित हो।
5. कहानी, नाटक, निबंध, उपन्यास एवं एकांकी - सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, समसामयिक, साहित्यिक विषय पर आधारित हो।

प्रस्तावित संरचना :- रचनात्मक लेखन

- इस पत्र के उत्तर हिंदी व अँग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. रचनात्मक लेखन की अवधारणा, स्वरूप, रचनात्मक लेखन की परिभाषा, लेखन के विविध रूप, मौखिक-लिखित, गद्य-पद्य, कथात्मक-कथेत्तर, बाल लेखन-प्रौढ़ लेखन, मुद्रित-इलेक्ट्रॉनिक आदि।

इकाई 2. साहित्य के विविध विधाओं यथा : कविता, कहानी, कथा साहित्य, नाट्य साहित्य, निबंध, संस्मरण, रिपोर्ताज आदि का लेखन, रचनात्मक लेखन के उद्देश्य, महत्व।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. रचनात्मक लेखन : सं. रमेश गौतम
2. साहित्य चिंतनः रचनात्मक आयाम : रघुवंश
3. पत्रकारी लेखन के आयाम : मनोहर प्रभाकर

MAJOR COURSE- MJ 2:

झारखण्ड की जनजातीय संस्कृति

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. ''झारखण्ड की जनजातीय संस्कृति'' पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को झारखण्ड के विविध जनजातीय संस्कृति, पर्व-त्यौहार, खान-पान, रीति-रिवाज, सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था न्याय व्यवस्था आदि से अवगत कराना प्रमुख ध्येय होगा।

प्रस्तावित संरचना :- झारखण्ड की जनजातीय संस्कृति

- इस पत्र के उत्तर हिंदी व अँग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. जनजाति की परिभाषा, जनजातियों की विशेषताएं, जनजातियों का वर्गीकरण, जनजातियों की समस्याएं, जनजातीय समाज में सांस्कृतिक परिवर्तन, जनजातीय समाज की अवधारणा, जाति व्यवस्था, न्याय व्यवस्था एवं रूढ़िप्रथा।

इकाई 2. झारखण्ड के प्रमुख जनजातियों का सामान्य परिचय, जाति विशेष की उत्पत्ति, इतिहास, प्रवर्जन, टोटेम, खान-पान, रहन-सहन, सामाजिक व्यवस्था, राजनैतिक व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था, वर्जनाएं, मांझी, पारगना, जोग मांझी, नायके, गोडैत, मुण्डा-मानकी, पाहन, बैगा, दीवान, कोटवार का सामान्य परिचय, साम्प्रतिक समस्याएँ और चुनौतियाँ, औद्योगीकरण एवं शहरीकरण के प्रभाव, जनजाति व गैरजनजातियों का विकास, समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ, जनजातीय प्रशासन नीति, जनजातीय कल्याणकारी संस्थाएँ।

इकाई 3. सांस्कृतिक विरासत (अखड़ा, गितिःओड़ाक्, जाहेर, जाहेरथान, मांझी थान, एवं देशाउलि)।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. झारखण्ड की जनजातियाँ : चतुर्भूज साहू
2. झारखण्ड की जनजातियाँ : बिमला चरण शर्मा
3. आदिवासी अस्मिता और झारखण्डी अस्मिता के सवाल : डॉ. रामदयाल मुण्डा
4. झारखण्ड के आदिवासी : डॉ. जियाउद्दीन अहमद
5. छोटानागपुर के उराँव रीति रिवाज- : डॉ. नारायण भगत

SEMESTER III

MAJOR COURSE- MJ 3:

संताली व्याकरण

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः-

1. इस पत्र के अंतर्गत विद्यार्थी संताली भाषा के व्याकरणिक संरचना एवं विशेषताओं को समझ सकेंगे।
2. साथ ही उन्हें संताली भाषा में शब्द गठन, वाक्य विन्यास, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, लिंग, वचन, कारक, काल, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, विलोम शब्द, अनेक शब्द के बदले एक शब्द, पर्यायवाची शब्द इत्यादि की जानकारी प्राप्त होगी।
3. इससे संताली भाषा साहित्य लेखन में शुद्धता आयेगी।

प्रस्तावित संरचना :- संताली व्याकरण

- इस पत्र के उत्तर संताली भाषा व देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. संताली व्याकरण का परिचय, लिपि ज्ञान, ध्वनि, अक्षर ज्ञान, शब्द ज्ञान, वाक्य ज्ञान, वर्तनी, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, लिंग, वचन, कारक, काल, समास, संधि, उपसर्ग, प्रत्यय।

इकाई 2. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, विलोम शब्द, अनेक शब्द के बदले एक शब्द, पर्यायवाची शब्द।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. संताली प्रवेशिका : डोमन साहु 'समीर'
2. संताली पारसी उनुरूम : डॉ. कृष्ण चन्द्र टुडू
3. संताली व्याकरण : सनातन हाँसदा
4. संताली भाषा साहित्य एवं व्याकरण : डॉ. सुशील सोरेन

MAJOR COURSE- MJ 4:

सामान्य लोक साहित्य

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. इस पत्र के अंतर्गत विद्यार्थियों को परंपरा से चली आ रही मौखिक रूप से संचालित साहित्यिक एवं पारंपरिक ज्ञान, उसकी संरचना, विशेषता आदि से अवगत कराना।

प्रस्तावित संरचना :- सामान्य लोक साहित्य

- इस पत्र के उत्तर हिंदी व अँग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. लोक साहित्य की अवधारणा, परिभाषा, विस्तार क्षेत्र, लोक साहित्य अध्ययन की परम्परा, वर्गीकरण, प्रवृत्ति, विशेषताएं एवं महत्व, राष्ट्रीय जीवन में लोक साहित्य की महत्ता, लोक साहित्य में लोक संस्कृति का चित्रण, लोक संगीत, शास्त्रीय दृष्टि से लोक गीतों की विशेषताएं ।

इकाई 2. लोक साहित्य की विभिन्न विधाएं - लोकगीत, लोक कथा, लोक गाथा, लोक नृत्य, लोक नाट्य, उत्पत्ति, परिभाषा, परम्परा, वर्गीकरण, विशेषताएं एवं महत्व, लोकसुभाषित का सामान्य परिचय, लोकोक्ति, मुहावरे, पहेली की उत्पत्ति, परिभाषा, परम्परा, वर्गीकरण, विशेषताएं।

इकाई 3. प्रकीर्ण साहित्य - लोकोक्ति, मुहावरे, पहेली, मंत्र, खेलगीत, बालगीत - परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ, महत्व।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. लोक साहित्य की भूमिका : डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
2. लोक साहित्य लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग : डॉ. श्रीराम शर्मा
3. लोक साहित्य एवं विज्ञान : डॉ. सत्येन्द्र
4. लोक साहित्य और संस्कृति : डॉ. दिनेश्वर प्रसाद

SEMESTER IV

I . MAJOR COURSE- MJ - 5
आदिवासी ज्ञान परम्परा (IKS)

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100 Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **60 Hours**

पाठ्कम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :–

1. संताल समुदाय की ज्ञान परम्परा के अध्ययन से विद्यार्थी उनकी संस्कृति से परिचित होंगे।
2. संताल समाज की पारम्परिक षिक्षा प्रणाली एवं सामाजिक संस्थाओं की जानकारी प्राप्त करेंगे।
3. विद्यार्थियों का नैतिक विकास एवं समुदायिक मूल्यों की समझ बढ़ेगी।
4. संताल समुदाय की प्राचीन ऐतिहासिक एवं सांस्कृति धरोहर से अवगत होंगे।
5. संताल समुदाय की पारंम्परिक षासन व्यवस्था एवं धार्मिक मान्यताओं का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

प्रस्तावित संरचना :–

नोट :– इस पत्र के उत्तर हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई – 1. संताल ज्ञान परम्परा का सामान्य परिचय

(क) संताल समाज में ज्ञान का स्वरूप एवं महत्व।
(ख) पारम्परिक विज्ञान (कृषि, वन, औषधि ज्ञान)
(ग) संताल संस्कृति एवं जीवन षैली।

इकाई – 2. संताल समाज की पारम्परिक, सामाजिक एवं षैक्षिक संस्थाएँ

(क) अखड़ा परम्परा
(ख) ग्राम सभा (मांझी–परगना व्यवस्था)
(ग) पारम्परिक षिक्षण–अधिगम

इकाई – 3. संताल समुदाय की एतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर

(क) माराङ बुरू, लुगु बुरू, आजोदिया बुरू, दोलमा बुरू
(ख) संताल हुल, डिबा़–किसुन हुल, तिलका़ हुल
(ग) पर्व–त्यौहार एवं पारंपरिक नृत्य–गीत

इकाई – 4. संताल समुदाय की धार्मिक परम्पराएँ

(क) बोंगा–बुरू (देवी–देवता)
(ख) धार्मिक लोक कथाएँ।
(ग) पारम्परिक चिकित्सा पद्धति।

अनुसासित पुस्तकें :–

1. झारखण्ड के प्राचीन स्मारक – डॉ० भुवनेष्वर अनुज
2. झारखण्ड की सांस्कृतिक विरासत – डॉ० गिरिधारी राम गांझू
3. आदिवासी समाज एवं संस्कृति – डॉ० के०सी० टुडू
4. Tradition and Institution on the Santals - L.O. Skrepsrood
5. संताड़ी होड़ सांवहेत् – डॉ० के०सी० टुडू
6. खेरवाल बोंसो धोरोम पुथी – मांझी रामदास टुडू

MAJOR COURSE- MJ 6:

संताली लोक साहित्य

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	**Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40**

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. इस पत्र के अंतर्गत संताल समुदाय के बीच आदि काल से मौखिक रूप से विरासत के रूप में प्रचलित पारंपरिक एवं साहित्यिक ज्ञान से अवगत कराना।
2. इसके अलावे विद्यार्थियों को संताली लोक साहित्य की संरचना, इसकी विशेषताओं एवं महत्व से अवगत कराना ताकि मौखिक रूप संचालित सामाजिक विरासत, पारंपरिक ज्ञान एवं इतिहास को संरक्षित किया जा सके।

प्रस्तावित संरचना :- संताली लोक साहित्य

- इस पत्र के उत्तर संताली भाषा व देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. संताली लोक साहित्य की अवधारणा, संताली लोक साहित्य की परिभाषा, क्षेत्र विस्तार, संताली लोक साहित्य का वर्गीकरण, संताली लोक साहित्य की विशेषताएं एवं महत्व।

इकाई 2. संताली लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोकसुभाषित का सामान्य परिचय, उत्पत्ति, इतिहास, परम्परा, वर्गीकरण, विशेषताएं एवं महत्व, सामाजिक जीवन में लोक साहित्य की महत्ता।

इकाई 3. संतालों में लोक विश्वास की अवधारणा, धार्मिक लोक विश्वास, देवी-देवता संबंधी लोक विश्वास, मानव और जगत् संबंधी लोक विश्वास, भूत-प्रेत संबंधी लोक विश्वास, जादू-टोना, सामाजिक लोक विश्वास, प्रकृति संबंधी लोक विश्वास, नीति परक लोक विश्वास, लोक विश्वास का सामाजिक महत्व।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. संताली लोकगीतों में साहित्य एवं संस्कृति	: डॉ. रतन हेम्ब्रम
2. होड़ काथा आर भेन्ता काथा	: धीरेन्द्र नाथ बास्के
3. संताली लोकगीत और जीवन दर्शन	: रमेश हेम्ब्रम
4. नाहाक् लोककथा संग्रह	: सुशील हेम्ब्रम
5. होड़ काहनीको	: पी. ओ. बोडिंग
6. संताली होड़ सांवहेत्	: डॉ. के. सी. टुडू

MAJOR COURSE- MJ 7:

संताली लोकगीत एवं लोककथा

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. इस पत्र के अंतर्गत संतालों के बीच आदि काल से मौखिक रूप से प्रचलित लोकगीतों एवं कथाओं में मौजूद इतिहास, सामाजिक, धार्मिक, लोक विश्वास एवं मान्यताओं आदि के गूढ़ तथ्यों को समझने में मदद मिलेगी।
2. विद्यार्थियों में लोकगीतों एवं कथाओं के प्रति रूचि बढ़ेगी। लोकगीतों एवं लोककथाओं को संरक्षित किया जा सकेगा।

प्रस्तावित संरचना :- संताली लोकगीत एवं लोककथा

- इस पत्र के उत्तर संताली भाषा व देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. संताली लोकगीत का सामान्य परिचय, परिभाषा, संताली लोकगीतों की उत्पत्ति, संताली लोकगीतों की परम्परा, संताली लोकगीतों का स्वरूप एवं वर्गीकरण, संताली लोकगीत की विशेषताएं, संताली लोकगीतों का महत्व।

इकाई 2. पर्व-त्यौहार संबंधी संताली लोकगीत (डाहार, बाहा, सोहराय, काराम, दोङ, लाँगड़े), संस्कार संबंधी संताली लोकगीत, अन्य विषय से संबंधित संताली लोकगीत, संताली लोकगीतों में प्रकृति चित्रण, संताली लोकगीतों में संस्कृति, संताली लोकगीतों में शिल्पगत् एवं काव्यगत विशेषताएं।

इकाई 3. संताली लोक कथा का सामान्य परिचय, परिभाषा, संताली लोककथाओं की उत्पत्ति, संताली लोककथाओं का वर्गीकरण, संताली लोककथाओं का महत्व, संताली लोक कथा का भाषिक स्वरूप, संरचनात्मक विशेषताएं, संताली लोककथाओं का सांस्कृतिक संबंध, संताली लोककथाओं का कथा-शिल्प, संताली लोककथाओं की विशेषताएं।

इकाई 4. प्रमुख लोक कथाओं का अध्ययन।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. संताली लोकगीतों में साहित्य एवं संस्कृति - डॉ. रतन हेम्ब्रम
2. होड़ काथा आर भेन्ता काथा - धीरेन्द्र नाथ बास्के
3. संताली लोकगीत और जीवन दर्शन - रमेश हेम्ब्रम
4. नाहाक् लोककथा संग्रह - सुशील हेम्ब्रम
5. होड़ क़ाहनीको - पी. ओ. बोडिंग
6. संताली होड़ सांवहेत् - डॉ. के. सी. टुडू

SEMESTER V

MAJOR COURSE- MJ 8:

सामान्य भाषा विज्ञान

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. सामान्य भाषा विज्ञान पत्र के अंतर्गत विद्यार्थियों को भाषा का सामान्य परिचय, भाषा की सामान्य विशेषताएं, भाषा का स्वरूप, भाषा की उत्पत्ति संबंधी सामान्य जानकारी प्रदान करना।
2. इससे विद्यार्थियों को भाषा की संरचना, भाषा के महत्व आदि भाषा के विविध पक्षों को समझाया जा सकेगा।

प्रस्तावित संरचना :- सामान्य भाषा विज्ञान

- इस पत्र के उत्तर हिंदी व अँग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. भाषा विज्ञान की परिभाषा, भाषा विज्ञान के अंग एवं शाखाएं, भाषा विज्ञान का अन्य विषयों से संबंध, भाषा विज्ञान के प्रकार, उपयोगिता।

इकाई 2. भाषा का सामान्य परिचय, अर्थ, परिभाषा, भाषा उत्पत्ति के सिद्धांत, भाषा के विविध रूप, भाषा की उपयोगिता, भाषा की सामान्य विशेषताएं, भाषा का महत्व, भाषा परिवर्तन के कारण, भाषाओं का वर्गीकरण (पारिवारिक एवं आकृतिमूलक वर्गीकरण)।

इकाई 3. ध्वनि विज्ञान, शब्द विज्ञान, अर्थ विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान की परिभाषा, परिवर्तन के कारण, कोश विज्ञान, हिन्दी भाषा का उद्भव-विकास, देवनागरी लिपि का विकास, गुण-दोष।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. सामान्य भाषा विज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. भाषा विज्ञान : डॉ. कर्ण सिंह
3. भाषा विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र : कपिलदेव द्विवेदी

MAJOR COURSE- MJ 9:

संताली प्रकीर्ण साहित्य

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. संताली समुदाय के बीच आदि काल से प्रचलित अनेकों लोकोक्ति, मुहावरे, पहेली, मंत्र आदि वर्तमान में भी काफी प्रासांगिक हैं। इनमें भावाभिव्यक्ति के अनेकों पारंपरिक ज्ञान और गूढ़ रहस्य छुपे हैं।
2. ''संताली प्रकीर्ण साहित्य'' पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थी संताली समुदाय के बीच आदि काल से प्रचलित इन लोकोक्ति, मुहावरे, पहेली, मंत्र आदि का अध्ययन कर सकेंगे।
3. इससे विद्यार्थी इन पारंपरिक ज्ञान को समझ कर साहित्य लेखन में प्रयोग कर सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना :- संताली प्रकीर्ण साहित्य

- इस पत्र के उत्तर संताली भाषा व देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. संताली प्रकीर्ण साहित्य का सामान्य परिचय, परिभाषा, वर्गीकरण, प्रकीर्ण साहित्य की विशेषताएं, महत्व।

इकाई 2. लोकोक्ति, मुहावरे, पहेली, विनती, मंत्र, बालगीत, खेलगीत, लोरी, आदि की परिभाषा, परम्परा, वर्गीकरण, विशेषताएं, महत्व एवं संरक्षण के उपाय।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. संताली होड़ सांवहेत् : डॉ. कृष्ण चन्द्र टुडू
2. संताली भेन्ता काथा एवं क़ाहतुक : बाबूलाल मुर्मू 'आदिवासी'
3. कुदुम पुथी : बाबूलाल मुर्मू 'आदिवासी'
4. होड़ काथा आर भेन्ता काथा : धीरेन्द्र नाथ बास्के

MAJOR COURSE- MJ 10:

संताली कहानी

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः-

1. विद्यार्थियों का साहित्य के प्रति रूचि विकसित करना।
2. कहानी में निहित भावों, विचारों, नैतिक मूल्यों को ग्रहण करने की क्षमता विकसित करना।
3. कल्पना और स्मरण शक्ति का विकास करना।
4. कहानी की रचना शीलता का विकास करना।

प्रस्तावित संरचना :- संताली कहानी

- इस पत्र के उत्तर संताली भाषा व देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. कहानी का सामान्य परिचय, कहानी की उत्पत्ति, परिभाषा, कहानी के तत्व, प्रकार, संताली कहानी का विकास, परम्परा, कहानी का महत्व, कहानी की विशेषताएं।

इकाई 2. पाठ्य पुस्तक :

1. ञुत आर मारसाल - एदेल बोंगा, ञुत आर मारसाल, बाज मुन्द़ाम, ख़ाली चेलाङ, मित् गेले गिदऱा ऐंगात्, काँत,
2. दामिन कुल्ही - रेगेंच् रेयाक् मुचात्, घारोंज् सिकड़ी, इञ गोगोवाक् कुकमू, ओकोय रोफाया
3. दुलाड़ ख़ातिर - निसा़ दिसा़ आर लालोच्, दुलाड़ ख़ातिर

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. काव्यशास्त्र विविध आयाम : मधु खराटे
2. संताली साहित्य का उद्‌भव और विकास : प्रो. डॉ. कृष्ण चन्द्र टुडू
3. ञुत आर मारसाल : आदित्य मित्र 'संताली'
4. दामिन कुलही : श्याम बेसरा 'जिवी राड़ेच्'
5. दुलाड़ ख़ातिर : श्याम बेसरा 'जिवी राड़ेच्'

MAJOR COURSE- MJ 11:

संताली साहित्यिक निबंध

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. विद्यार्थियों को संताल समुदाय के भाषा-साहित्य, संस्कृति एवं समसामयिक विषयों पर आधारित निबंध पर चर्चा परिचर्चा कर अवगत होंगे।
2. इससे विद्यार्थियों में निबंध लेखन की बारीकियों को समझने में मदद मिलेगी और उनके निबंध लेखन कौशल का विकास होगा।
3. विद्यार्थी साहित्यिक निबंध की विविध शैलियों से परिचित होंगे। उनके अन्दर मौलिक चिंतन, मनन, निरीक्षण आदि करने की भावना का विकास होगा।

प्रस्तावित संरचना :- संताली साहित्यिक निबंध

- इस पत्र के उत्तर संताली भाषा व देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. निबंध का परिचय, निबंध की परिभाषा, स्वरूप, निबंध के प्रकार, संताली निबंध लेखन की परम्परा, निबंध की विशेषताएं।

इकाई 2. निबंध लेखन विधि, संताली भाषा-साहित्य, संस्कृति एवं समसामयिक विषयों पर आधारित निबंध संताली साहित्यिक निबंध पर चर्चा-परिचर्चा।

इकाई 3. भाषा सम्बन्धी निबंध (संताली भाषा का उद्‌भव-विकास, क्षेत्र-विस्तार आदि से सम्बन्धित निबंध)
साहित्य सम्बन्धी निबंध (संताली भाषा के साहित्यकारों पर निबंध)
संस्कृति सम्बन्धी निबंध (पर्व-त्योहार एवं संस्कार आदि से सम्बन्धित निबंध)

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. काव्यशास्त्र विविध आयाम : डॉ. मधु खराटे
2. नाँहाक् संताली ओ़नो़ल : बाबूलाल मुर्मू 'आदिवासी'
3. हिन्दी निबन्ध-लेखन : प्रो. विराज एम. ए.

SEMESTER VI

MAJOR COURSE- MJ 12:

संताली नाटक

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः-

1. विद्यार्थी संताली नाटक से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थी संताली नाटक के उद्‌भव, विकास, परिभाषा, तत्व, विशेषताएँ और महत्व को भी जान सकेंगे।
3. विद्यार्थियों में नाट्य मंचन के माध्यम से अभिनय-कला का विकास होगा।
4. नाटक के माध्यम से विद्यार्थियों में संवाद-कला का भी विकास होगा।

प्रस्तावित संरचना :- संताली नाटक

- इस पत्र के उत्तर संताली भाषा व देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. नाटक का परिचय, परिभाषा, तत्व, संताली नाटक का उद्‌भव-विकास, लेखन परम्परा, महत्व, विशेषताए।

इकाई 2. पाठ्य पुस्तक :

1. एरावाक् आ़यद़ारी
2. जुरी ख़ातिर

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. काव्यशास्त्र विविध आयाम : मधु खराटे
2. एरावाक् आ़यद़ारी : सोनोत किस्कू
3. जुरी ख़ातिर : डॉ. के. सी. टुडू

MAJOR COURSE- MJ 13:

संताली कवि एवं उनके काव्य

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः-

1. विद्यार्थी संताली कवियों और उनके काव्यों से परिचित होंगे।
2. कविता के मानकों को समझकर कविता का सही ढंग से विश्लेषण कर सकेंगे।
3. उनमें काव्य सृजन की अभिरूचि उत्पन्न सकेगी जिससे संताली काव्य विकसित हो सकेंगे।
4. विद्यार्थियों में काव्य के पाठ को समझने की क्षमता हो सकेगी।

प्रस्तावित संरचना :- संताली कवि एवं उनके काव्य

- इस पत्र के उत्तर संताली भाषा व देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. प्राचीन कवियों का परिचय एवं काव्य

इकाई 1. मध्यकालीन कवियों का परिचय एवं काव्य

इकाई 2. आधुनिक कवियों का परिचय एवं काव्य

कवि/ओनोड़हिया:

माँझी रामदास टुडू 'रेसका', पंडित रघुनाथ मुर्मू, साधु रामचाँद मुर्मू, सारदा प्रसाद किस्कू, गोरा चाँद टुडू, डोमन हाँसदा, पाउल जुझार सोरेन, नारायण सोरेन, डब्लूजी आर्चर, नाथानियल हैम्ब्रम।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. संताली साहित्य का इतिहास : बाबूलाल मुर्मू 'आदिवासी'
2. संताली साहित्य का उद्भव और विकास : डॉ. कृष्ण चन्द्र टुडू

MAJOR COURSE- MJ 14:

साहित्य सिद्धांत

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. 'साहित्य सिद्धांत' पत्र के अंतर्गत विद्यार्थियों को साहित्य के विविध रूपों से संबंधित रचना प्रक्रिया एवं सैद्धांतिक पक्षों से अवगत कराना।
2. इससे विद्यार्थियों में साहित्य के विभिन्न शैलियों में लेखन कौशल का विकास होगा।

प्रस्तावित संरचना :- साहित्य सिद्धांत

- इस पत्र के उत्तर हिंदी व अँग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. काव्य की परिभाषा, हेतु, काव्य लक्षण, काव्य प्रयोजन, काव्य के तत्व, काव्य के रूप (भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण)।

इकाई 2. साहित्य के विविध विधाएँ - प्रबंध काव्य, जीवनी, आत्मकथा, डायरी, रिपोर्ताज, समीक्षा, अलोचना एवं समालोचना।

इकाई 3. शब्द शक्ति, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना, परिभाषा, रस, छंद, अलंकार - अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, वीप्सा, पुनरूक्ति, उपमा, रूपक, भ्रांतिमान, संदेह, उत्प्रेक्षा, अतिश्योक्ति, तुल्योगिता, दीपक, समासोक्ति, विरोधाभास, विभावना, मानवीकरण।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. काव्य के रूप	: गुलाबराय
2. साहित्यलोचन	: डॉ. श्याम सुंदर दास
3. काव्य शास्त्र विविध आयाम	: डॉ. मधु खराटे
4. काव्य के तत्व	: डॉ. देवेन्द्र शर्मा
5. अलंकार मुक्तावली	: आचार्य देवेन्द्र नाथ शमा
6. अलंकार परिजात	: नरोत्तम दास स्वामी

MAJOR COURSE- MJ 15:

आदिवासी साहित्य

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः-

1. आदिवासी साहित्य' पत्र के अंतर्गत विद्यार्थियों में आदिवासी साहित्य की संकल्पना, संरचना, उसकी स्वरूप, उसकी विशेषताओं, लेखन परंपरा एवं आदिवासी साहित्य समृद्धि की संभावना एवं आवश्यकताओं से अवगत कराना।
2. विद्याार्थियों में आदिवासी संबंधी मानवशास्त्रीय और राजनैतिक अवधारणा से परिचित कराना।

प्रस्तावित संरचना :- आदिवासी साहित्य

- इस पत्र के उत्तर हिंदी व अँग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1 . आदिवासी साहित्य का सामान्य परिचय, अर्थ, परिभाषा, स्वरूप और संकल्पना, आदिवासी साहित्य परंपरा, अध्ययन की आवश्यकता और महत्व, आदिवासी साहित्य विधा की पृष्ठभूमि, आदिवासी साहित्य चेतना, आदिवासी साहित्य में जीवन दर्शन, आदिवासी साहित्य के मूल्य, आदिवासी साहित्य का संबंध तथा संकलन, आदिवासी साहित्य का लेखन वस्तु और शैली, भाषा-साहित्य और आदिवासी लेखक-लेखिकाएं, आदिवासी साहित्य और संपदा की उपलब्धियां और सीमाएं।

इकाई 2. आदिवासी जीवन केन्द्रित उपन्यासों का परिचय।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. आदिवासी साहित्य परंपरा और प्रयोजन : वंदना टेटे
2. आदिवासी साहित्य विधाः शास्त्र और इतिहास : डॉ. बापूराव देसाई
3. हिंदी में आदिवासी साहित्य : डॉ. इसपाक अली
4. प्राथमिक आदिवासी विमर्श : अश्विनी कुमार पंकज (संपादक)
5. आदिवासी साहित्य यात्रा : रमणिका गुप्ता
6. आदिवासी दर्शन और समाज : हरिराम मीणा
7. ग्लोबल गांव के देवता : रणेन्द्र कुमार

SEMESTER VII

MAJOR COURSE-MJ 16:

शोध प्रविधि

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: IHr) +75 (ESE: 3Hrs)-100 Pass Marks: Th (SIE + ESE)-40

(Credits: Theory-04) 60 Hours

पाठ्यक्रम का उद्देश्यः-

1. शोध प्रविधि से छात्रों में जानकारी का विश्लेषण करने एवं मूल्याकन करने तथा तार्किक निष्कर्ष निकालने में मदद एवं आलोचनात्मक सोच का विकास होगा।
2. शोध प्रविधि छात्रों को समस्याओं की पहचान करने, जानकारी इकट्ठा करने और समाधान खोजने में मदद करती है। इससे उनकी समस्या समाधान कौशल में सुधार होगा।
3. शोध प्रविधि छात्रों को विषय वस्तु की गहरी समझ विकसित करने में मदद करेगी, क्योंकि वे सक्रिय रूप से जानकारी की खोज करते हैं और उसका विश्लेषण करते है।

4. शोध प्रविधि छात्रों को बेहतर ढंग से सीखने और याद रखने में मदद करेगी, जिससे उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार होगी।

5. शोध प्रविधि छात्रों को न केवल अकादमिक रूप से, बल्कि व्यक्तिगत और पेशेवर रूप से भी सफल होने के लिए तैयार करेगी।

प्रस्तावित संरचना

निर्देश: इस पत्र का उत्तर हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई- 1. अनुसंधान की प्रकृति तथा क्षेत्र अनुसंधान या शोध का अर्थ, परिभाषा तथा स्वरूप, अनुसंधान की सामान्य

प्रकृति, अनुसंधान के पद, अनुसंधान के प्रकार, क्षेत्र आदि।

इकाई- 2. अनुसंधान की समस्या स्वरूप तथा स्रोत समस्या की खोज, समस्या क्या है, समस्या की उत्पत्ति, समस्या के स्रोत, समस्या का चुनाव, समस्या की परिभाषा, समस्याओं के प्रकार, अनुसंधान कार्य की प्रस्तावित

रूपरेखा, शोधार्थी के गुण, शोध निर्देशक के गुण आदि।

इकाई 3. परिकल्पना परिभाषा, स्रोत, स्वरूप तथा कार्य, गुण, धारणाएँ एवं परिकल्पना की कठिनाईयाँ ।

अनुशंसित पुस्तकें :

1. अनुसंधान परिचय : पारसनाथ राय
2. अनुसंधान प्रविधि सिद्धांत और प्रक्रिया : एस. एन. गणेशन
3. शोध प्रविधि और प्रक्रिया : डॉ. हरीश अरोड़ा
4. शोध प्रविधि : डॉ. विनय मोहन शर्मा

MAJOR COURSE- MJ 17:

संताली उपन्यास

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. विद्यार्थी संताली उपन्यास से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थियों में उपन्यास के माध्यम से रचनात्मक विचार और सृजन धर्म का विकास होगा ।
3. विद्यार्थी उपन्यास के माध्यम से सम्पूर्ण मानव जगत की मानवीयता से परिचित होगे।
4. उपन्यास के माध्यम से विद्यार्थी, जीवन की वास्तविकता से परिचित होंगे।

प्रस्तावित संरचना :- संताली उपन्यास

- इस पत्र के उत्तर संताली भाषा व देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. उपन्यास का सामान्य परिचय, उपन्यास की उत्पत्ति, परिभाषा, उपन्यास के तत्व, संताली उपन्यास का विकास, परम्परा, संताली उपन्यास की विशेषताएं, संताली उपन्यास का महत्व, संताली उपन्यास लेखन विधि।

इकाई 2. पाठ्य पुस्तक :

1- हाड़मावाक् आतु

इकाई 3. संताली के प्रतिनिधि उपन्यास एवं उपन्यासकार का परिचय।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. काव्यशास्त्र विविध आयाम : मधु खराटे
2. हाड़मावाक् आतु : रोबेन रोसेन किस्कु रापाज

MAJOR COURSE- MJ 18:

संताली साहित्यकार एवं उनकी कृतियां

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. विद्यार्थी संताली साहित्यकारों और उनके कृतियों से परिचित होंगे।
2. उनमें साहित्य सृजन की अभिरूचि उत्पन्न हो सकेगी जिससे संताली साहित्य विकसित होगी।
3. विद्याथियों में साहित्य को समझने की दृष्टि विकसित हो सकेगी।
4. संताली साहित्य के प्रारंभिक और विकासात्मक स्वरूप सें परिचित हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना :- संताली साहित्यकार एवं उनकी कृतियाँ

- इस पत्र के उत्तर संताली भाषा व देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. प्राचीन साहित्यकारों का परिचय एवं कृतियाँ

इकाई 2. मध्यकालीन साहित्यकारों का परिचय एवं कृतिया

इकाई 3. आधुनिक साहित्यकारों का परिचय एवं कृतियाँ

इकाई 4. संताली साहित्यकार : पी.ओ. बोडिंग, एल.ओ. स्क्रेप्सरूड, बाल किशोर बास्की, आदित्य मित्र 'संताली', डोमन साहू समीर, बाबूलाल मुर्मू 'आदिवासी', कृष्ण चन्द्र टुडू, भाईया हाँसदा 'चासा', ठाकुर प्रसाद मुर्मू।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. संताली साहित्य का उद्भव और विकास : डॉ. कृष्ण चन्द्र टुडू
2. संताली साहित्य का इतिहास : बाबूलाल मुर्मू 'आदिवासी'
3. संताली साहित्य का इतिहास : भाईया हाँसदा
4. Bibliography of the Santali Writers (Part –1,2) : All India Santali Writer's Association

RESEARCH COURSES- RC 1

शोध योजना एवं तकनीक

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) +75 (ESE: 3Hrs)=100 Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) 60 Hours

पाठ्यक्रम का उद्देश्य :-

1. विद्यार्थी अनुसंधान योजना के प्रमुख चरणों का व्यापक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

2. विद्यार्थी अनुसंधान के प्रमुख तकनीकों का व्यापक जानकारी प्राप्त करते हुए इसके प्रमुख पहलुओं को जान सकेंगे।

3. इसके माध्यम से शौष कार्य के प्रति आकर्षण बढ़ेगा।

इसके माध्यम से छात्र देश की वर्तमान परिस्थितियों से अवगत होंगे।

प्रस्तावित संरचना

निर्देश: इस पत्र का उत्तर हिन्दी या अंग्रेजी भाषा में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. अनुसंधान योजना में प्रमुख चरण शोध समस्या, उद्देश्य, परिकल्पनाएँ शोध प्रारूप और डिजाइन (जैसे, प्रयोगात्मक, वर्णनात्मक, केस स्टडी का चयन, जनसंख्या और नमूनाकरण रणनीति की पहचान, लक्ष्य, जनसंख्या का निर्धारण बेटा एकत्र करने के लिए उपयुक्त तकनीकें जैसे- सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन या दस्तावेज़ विश्लेषण, डेटा विश्लेषण, समयरेखा और बजट, नैतिक निहितार्थों पर विचार, संभावित चुनौतियाँ एवं समी का दस्तावेजीकरण आदि।
इकाई 2. अनुसंधान तकनीकें गुणात्मक तकनीके, मात्रात्मक तकनीकें, मिश्रित विधियों, साहित्य की समीक्षा, अनुसंधान

उपकरणों और प्रक्रियाओं का परीक्षण एवं डेटा विश्लेषण तकनीके आदि।

इकाई 3. कम्प्यूटर परिचय, परिचालन प्रणाली एवं कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग शब्द संसाधन, डाटा ससाधन।

इकाई 4. संदर्भ सूची, आधार ग्रंथ सूची, राहायक ग्रंथ सूची, फुट नोदरा, स्थान निर्धारण, चुनी हुई पंक्तियों का चयन और प्रयोग।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. अनुसंधान परिचय	पारसनाथ राय
2. अनुसंधान प्रविधि सिध्दांत और प्रक्रिया	एस. एन. गणेशन
3. शोध प्रविधि और प्रक्रिया	डॉ. हरीश अरोड़ा
4. शोध पध्दति	दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, महर्षी दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
5. कम्प्यूटर और मीडिया	प्रो. मगवान देव पाण्डेय, डॉ. योगेश कु० पाण्डेय
6. कम्प्यूटर शिक्षा	सुरेश मेनरिया, मधु मेनारिया
7. शोध स्वरूप एवं मानक व्यवहारिक कार्यविधि	बैजनाथ सिंहल

ADVANCED MAJOR COURSE- AMJ 1:
झारखण्ड के महापुरुष एवं आदि विरासत

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	**Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40**

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः-

1. झारखण्ड के महापुरुष एवं आदि विरासत पत्र के अंतर्गत विद्यार्थियों को अपनी अस्मिता, पहचान और अधिकार के लिए शहीद हुए विभिन्न विभूतियों के जीवन संघर्षगाथा की इतिहास से परिचय कराना है।
2. इससे विद्यार्थियों में अपनी समाज, देश और राष्ट्र के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना जाग्रत होगी।
3. इसके साथ ही संताल समुदाय का आदि विरासत, उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं अन्य विशेषताएँ और महत्व को जान सकेंगे।

पाठ्य संरचना :- झारखण्ड के महापुरुष एवं आदि विरासत

- इस पत्र के उत्तर हिंदी व अँग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. सिद्धो-कान्हू मुर्मू, चांद-भैरव, बाबा तिलका मांझी, फूलो-झानो, पोटो हो, बिरसा मुण्डा, वीर बुधु भगत, ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव, शेख भिखारी, गणपत राय, सिंगराय-बिंदराय, नीलाम्बर-पीताम्बर, तेलंगा खड़िया, मछुआ गागराई, महेश्वर जामुदा, सिनगी दई, कईली दई, माकी दई।

इकाई 2. हिहिड़-पिपिड़ि, लुगु बुरु घंटा बाड़ी, दोरबार चटानि, सीतानाला, कपि बुरु, सुतियाम्बे, उलिहातु, डोम्बारी बुरू, चोकाहातु, मरंग बुरू, दा:सोङ, सुकन बुरू,चलकद इत्यादि। इन विरासतों की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं अन्य महत्व, विशेषताएं।

इकाई 3. पद्मश्री डॉ. रामदयाल मुण्डा, पं. रघुनाथ मूर्म, कोल लको बोदरा, पद्मश्री दिगंबर हांसदा, कार्तिक उरांव बिहारी लकड़ा, पद्मश्री जुएल लकड़ा, जयपाल सिंह मुण्डा, एन. ई. होरो, भीखराम भगत, राय साहब बंदी राम उरांव, पं. आयता उरांव, बहादुर उराँव, पद्मश्री जानुम सिंह सोय, लाड़ो जोंको आदि।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. झारखण्ड के शहीद : डॉ. भुवनेश्वर अनुज
2. सिंहभूम के शहीद लड़ाका हो : डॉ. दमयंती सिंकु
3. बिरसा मुण्डा और उनका आंदोलन : डॉ. कुमार सुरेश सिंह
4. आधुनिक भारत के निर्माता बिरसा मुण्डा : डॉ. अनुज कुमार धान
5. आदिवासी धर्म एवं संस्कृति के अग्रदूत : कार्तिक उराँव : रायनन्द साहु
6. हापड़ाम कोवाक् जियोन चरित : रमेश चन्द्र किस्कू

SEMESTER VIII

MAJOR COURSE- MJ 19:

अनुवाद विज्ञान

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी अनुवाद के विभिन्न पक्षों को गहराई से समझ सकेंगे।
2. अनुवाद के विभिन्न प्रकार, अनुवाद प्रक्रिया, अनुवाद के विभिन्न स्वरूप एवं महत्व का समझ से अनुवाद में उनकी रूचि को बढ़ाया जा सकेगा।
3. इससे अपनी भाषा-साहित्य की समृद्धि में सहायता मिलेगी।

प्रस्तावित संरचना :- अनुवाद विज्ञान

- इस पत्र के उत्तर हिंदी व अँग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. अनुवाद का अर्थ, परिभाषा, अनुवाद का महत्व, अनुवाद का स्वरूप, अनुवाद कला, विज्ञान, शिल्प, अनुवाद की समस्या, अनुवाद के प्रकार, अनुवाद की प्रक्रिया, अनुवाद की समस्याएं, अनुवाद के क्षेत्र में संभावनाएं।

इकाई 2. संताली भाषा से हिन्दी में साहित्य की किसी एक विधा अथवा किसी गद्यांश-पद्यांश अथवा शब्दों का अनुवाद लेखन देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

इकाई 3. हिन्दी अथवा अंग्रेजी से संताली भाषा में साहित्य की किसी एक विधा अथवा किसी गद्यांश,पद्यांश, वाक्य अथवा शब्दों का अनुवाद लेखन देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. अनुवाद विज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. अनुवाद विज्ञान : विनोद गोदरे
3. अनुवाद कला : सिद्धांत एवं प्रयोग : डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया
4. अनुवाद कला : डॉ. विश्वनाथ अय्यर
5. अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग : जी. गोपीनाथन
6. अनुवाद विज्ञान की भूमिका : के.के. गोस्वामी

MAJOR COURSE- MJ 20:
संताली भाषा विज्ञान

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	**Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40**

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. विद्यार्थियों को भाषा के स्वरूप और महत्त्व का ज्ञान प्राप्त होगा।
2. संताली साहित्य से परिचित हो सकेंगे।
3. लिपि और लिपि की समस्याओं से परिचित हो सकेंगे।
4. भाषा परिवर्तन के कारणों से परिचत हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना :- संताली भाषा विज्ञान

- इस पत्र के उत्तर संताली भाषा व देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. संताली भाषा का परिचय, परिभाषा, उत्पत्ति, क्षेत्र विस्तार, वर्गीकरण, विशेषता, भाषा परिवर्तन के कारण, बोली और भाषा में अंतर।

इकाई 2. ध्वनिविज्ञान, पद विज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थविज्ञान, लिपि एवं लिपि की समस्या।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. संताली आद्पारसी आकिल : बाबूलाल मुर्मू 'आदिवासी'
2. संताली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन : डॉ. कृष्ण चन्द्र टुडू

3. भाषा विज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी

ADVANCED MAJOR COURSE- AMJ 2:

झारखण्डी कानून एवं स्वशासन व्यवस्था

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः-

1. विद्यार्थी झारखण्डी समुदाय के संस्कृति, कानून व पारम्परिक शासन व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. झारखण्डी कानून व पारम्परिक शासन-व्यवस्था से परिचित हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना :- झारखण्डी कानून एवं पारम्परिक शासन व्यवस्था

- इस पत्र के उत्तर हिंदी व अँग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम (सी.एन.टी. एक्ट 1908 अधिनियम)

संतालपरगना काश्तकारी अधिनियम (एस.पी.टी. एक्ट अधिनियम)

इकाई 2. पेसा (PESA) कानून 'द प्रोविजनल ऑफ पंचायत एक्टेंशन टू द शिड्यूल्ड एरिया-1996 एवं विल्किन्सन रूल'

इकाई 3. पारम्परिक शासन व्यवस्था - मुण्डा-मानकी व्यवस्था, पड़हा-पंचायत, माझी-परगनैत, माँझी, आतूबैसी लोबीरबैसी, डोकलोऽ-सोहोर, ग्रामसभा, पंचायत, दिउरि, पाहन, महतो, दीवान, कोटवार के दायित्व, अधिकार, सामाजिक महत्व, प्रमुख प्रावधान।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. ग्राम पंचायत व्यवस्था : कितनी अच्छी, कितनी बुरी : पी.एन.एस.सुरीन
2. छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम (सी.एन.टी. एक्ट १९०८) : डी.पी. नरूल्ला
3. संताल परगना काश्तकारी अधिनियम (एसपीटी एक्ट) : क्राउन पब्लिकेशन्स
4. झारखण्ड पंचायती राज अधिनियम, २००१ : रश्मि कात्यायन
5. आदिवासी अधिकार : सं. रमेश जेराई
6. मैन्यूअल ऑफ झारखण्ड लैंड्स : रश्मि कात्यायन
7. छोटानागपुर भूमि विधियाँ : एस.एन.श्रीवास्तव
8. पंचायती राज चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ : महिपाल
9. हो जनजाति की पारम्परिक मानकी-मुण्डा स्वशासन व्यवस्था (पोड़ाहाट-कोल्हान) : कमल लोचन कोड़ाह

ADVANCED MAJOR COURSE- AMJ 3:

पारम्परिक ज्ञान एवं तकनीकी

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **Theory: 60 Lectures**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः-

1. पारम्परिक ज्ञान संताल जनजाति की बौद्धिक सम्पदा है जो सदियों से चली आ रही है। यह इनकी अस्तित्व का अभिन्न अंग है।
2. इनमें इनकी सांस्कृतिक विरासत, रीति-रिवाज, और विश्वास एवं ज्ञान प्रणालियों का अक्षय भण्डार संरक्षित है।
3. इस विषय के अध्ययन से विद्यार्थियों को पारम्परिक ज्ञान हासिल होगा।
4. वे अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण के प्रति जागरूक होंगे।
5. उनमें पारम्परिक ज्ञान एवं तकनीकी से कौशल का सृजन किया जा सकेगा।

प्रस्तावित संरचना :- पारम्परिक ज्ञान एवं तकनीकी

- इस पत्र के उत्तर हिंदी व अँग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. पारम्परिक ज्ञान की अवधारणा, विशेषताएं, पारम्परिक ज्ञान प्रणाली का महत्व, पारम्परिक ज्ञान और लोक विश्वास, पारम्परिक ज्ञान संरक्षण प्रणाली।

इकाई 2. शिकार, कृषि, चिकित्सा, मौसम, पारिस्थितिकी, पर्यावरण एवं आकाशीय पिण्ड से संबंधित ज्ञान।

इकाई 3. समाज में पारम्परिक ज्ञान का महत्व, वर्तमान चुनौतियां।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. सिलास हेम्ब्रम : होड़ोपैथी रेड् रानू
2. मेनस राम ओड़ेया : मतुराअः कहानि भाग-३
3. एरे उइको : डॉ. दासराम बारदा
4. रेहेत् रानपुथी : नुनकू सोरेन
5. Santal Medicine and Connected Folklore : P.O. Bodding

RESEARCH COURSES-RC 2

अनुसंधान / परियोजना शोध प्रबंध / अनुसंधान इंटर्नशिप / क्षेत्र कार्य

Marks: 50 (SIF: 25 Synopsis +25 Viva on Synopsis: 1Hr) + 100 (ESE. Pr: 6Hrs) +50 (Viva)=200 Pass Marks = 80

सेमेस्टर आंतरिक परीक्षा के लिए परीक्षकों के लिए दिशानिर्देश

थीसिस का सारांश = 25 marks

परियोजना सारांश प्रस्तुति और मौखिक परीक्षा = 25 marks

अंतिम सेमेस्टर विश्वविद्यालय परीक्षा के लिए परीक्षकों के लिए दिशानिर्देश

150 अंको की परीक्षा में निम्नलिखित निर्देशानुसार शोधनिबंध / परियोजना निबंध पर अंक निर्धारित किये जायेंगे।

परियोजना मॉडल (यदि कोई हो) और परियोजना रिकॉर्ड नोटबुक = 100 marks

परियोजना प्रस्तुति और मौखिक परीक्षा = 50 marks

नोट: इस पत्र का मूल्यांकन विश्वविद्यालय के बाह्य परीक्षक एवं आंतरिक परीक्षक करेंगे और इसकी मौखिकी भी सम्पन्न करायेंगे।

शोध-प्रबंध / परियोजना निबंध का मूल्यांकन निम्नलिखित बिन्दुओं के आलोक में होगा-

विषय चपन के लिए प्रेरणा

पद्धति और सामग्री चयन/संकलन

संकल्पना एवं महत्व

कार्यप्रणाली और सामग्री की गहराई

किसी प्रतिष्ठित संगठन के साथ इंटर्नशिप कार्यक्रम में भागीदारी

डेटा संग्रह में अनुसंधान तकनीक का अनुप्रयोग

भविष्य के लिए उपयोगिता एवं प्रासंगिकता

रिपोर्ट प्रस्तुति

प्रस्तुति शैली / मौखिकी

लघुशोध-प्रबंध न्यूनतम 100 टंकित पृष्ठों में अपेक्षित है।

अनुसंधान :

खड़िया साहित्य एवं संस्कृति से संबंधित किसी भी विषय पर लघुशोध प्रबंध।

लघु शोध प्रबंध लगभग सौ पृष्ठों का हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में अनिवार्य रूप से अपेक्षित होंगे।

इसमें 30 पृष्ठों का फील्ड रिपोर्ट भी शामिल होगा।

परियोजना शोध प्रबंध / अनुसंधान इंटर्नशिप / क्षेत्र कार्य

खातकोतर के छात्रों को रांची विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन वाले किसी भी संगठन के तहत इंटर्न के रूप में छतीस (36) दिन काम करना होगा, जिसमें सरकारी संगठन / न्यापपातिका / स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र / शैक्षणिक संस्थान / गैर सरकारी संगठन आदि शामिल हो सकते हैं।
परियोजना शोथ प्रबंध शुरू करने से पहले विभाग या संस्थान के प्रमुख से अनुमति लेकर, कार्य की प्रकृति और स्थान के बारे में लिखित रूप से सूचित किया जाना चाहिए।
परियोजना कार्य जमा करना

प्रत्येक छात्र को संबंधित विभाग के विभागाध्यक्ष द्वारा विधिवत अग्रेषित शोध प्रबंध की दो प्रतियाँ जमा करनी होगी। अग्रेषित प्रतियाँ सेमिनार से कम से कम

सात दिन पहले मूल्यांकन के लिए विभाग संस्थान को जमा करनी होंगी।

परियोजना रिपोर्ट में निम्नलिखित शामिल होंगे

b. परियोजना से संबंधित क्षेत्र कार्य प्रयोगशाला कार्य।

किए गए कार्य के आधार पर शोथ प्रबंध तैयार करना।

d. निर्धारित विषय पर सेमिनार में परियोजना कार्य की प्रस्तुति और उसके बाद खुला साक्षात्कार।

कम से कम एक शोध पत्र किसी सम्मेलन में प्रस्तुत किया जाना चाहिए या किसी प्रतिष्ठित पत्रिका में प्रकाशित किया जाना चाहिए।

विषय: औद्योगिक/सामाजिक रूप से प्रासंगिक विषयों से संबंधित परियोजना कार्य दिया जा सकता है।

NB: छात्र विभाग के शिक्षक के परामर्श से परियोजना कार्य के लिए विषयों का चयन करेंगे।

यह सेमिनार रांची विश्वविद्यालय, रांची के संबंधित पीजी विभाग में आयोजित किया जाएगा।

MINOR COURSE- MN -A

परिचयात्मक संताली

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **60 Hours**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. विद्यार्थी संताली साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रारंभिक और विकासात्मक स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
2. संताली साहित्य की उद्भव-विकास, नामकरण, लेखन परम्परा, क्षेत्र-विस्तार और विशेषताओं के बारे में जान सकेंगे।
3. संताली साहित्य विधा से परिचित हो सकेंगे।
4. संताली साहित्य के कवियों से परिचित हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना :- परिचयात्मक संताली

- इस पत्र के उत्तर हिंदी व अँग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई– **1** संताली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उद्भव–विकास, नामकरण, लेखन परम्परा, क्षेत्र–विस्तार, विशेषताएँ।

इकाई– **2** संताली लोकसाहित्य एवं शिष्ट साहित्य

(क) लोक साहित्य– लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य एवं प्रकीर्ण साहित्य

(ख) शिष्ट साहित्य–

1. पद्य साहित्य– गीत एवं कविताएँ
2. गद्य साहित्य– कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध एवं जीवनी

इकाई–**3** कवि एवं काव्य

(क) प्राचीन काल

(ख) मध्य काल

(ग) आधुनिक काल

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. संताली भाष ासाहित्य का उद्भव और विकास : डॉ. कृष्ण चन्द्र टुडू
2. संताली सांवहेंत् रेयाक् नागाम : लोखोन चोंद्रो मुर्मू
3. संक्षिप्त संताली साहित्य : परिमल हेम्ब्रम
4. सानताडी सांवहेत रेनाः ओमोनोम : प्रो (डॉ.) कृष्ण चन्द्र टुडू
5. संताली लोकगीतों में साहित्य एवं संस्कृति : डॉ. रतनहेम्ब्रम
6. संताली होड़ सांवहेत् : डॉ. कृष्ण चन्द्र टुडू
7. संताली भेन्ताकाथा एवं क़ाहतुक : बाबूलाल मुर्मू 'आदिवासी'
8. होड़ काथा आर भेन्ता काथा : धीरेन्द्र नाथ बास्के
9. कुदुम पुथी : बाबूलाल मुर्मू 'आदिवासी'
10. संताली लोक गीत और जीवन दर्शन : रमेश हेम्ब्रम
11. नाहाक् लोक कथा संग्रह : सुशील हेम्ब्रम

MINOR COURSE- MN B:

संताल जनजाति के संस्कार

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **60 Hours**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. संताल जनजाति के संस्कार" पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी संताल जनजाति के विभिन्न संस्कारों से अवगत होंगे।
2. इससे विद्यार्थियों में समाज में निहित विशुद्ध संस्कृति के प्रति जानने की जिज्ञासा बढ़ेगी और परंपरा से चली आ रही रीति-रिवाज, मान्यता, विश्वास आदि से अवगत होंगे।

प्रस्तावित संरचना :- संताल जनजाति के संस्कार

- इस पत्र के उत्तर संताली भाषा व देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. संताल जनजाति में संस्कार की अवधारणा, संस्कार का उद्गम एवं संस्कार उत्पत्ति के कारक तत्व, संस्कार के उद्देश्य, महत्व, मानव जीवन में संस्कारों का प्रभाव।

इकाई 2. जन्म, विवाह एवं मृत्यु संस्कार की प्रक्रिया, उद्देश्य, महत्व, संस्कारों की विशेषताएं, मान्यताएं एवं लोक विश्वास, वर्तमान में संस्कार परिवर्तन के कारक तत्व एवं प्रभाव।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. संताल कोआक् आ़रीचा़ली आ़रसी : डॉ. स्टेनशीला हेम्ब्रम
2. खेरवाल आ़रीबाँदी : डॉ. कृष्ण चन्द्र टुडू
3. समाज और संस्कृति : डॉ. श्याम चरण दुबे

MINOR COURSE- MN - C

संताल जनजाति के पर्व-त्यौहार एवं आभूषण

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **60 Hours**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. संताल जनजाति के पर्व-त्यौहार एवं आभूषण पत्र के अंतर्गत विद्यार्थी हो जनजाति के पर्व-त्यौहारों की सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व, विधि-विधान, पर्व-त्यौहारों की विशेषता आदि को समझ सकेंगे।
2. इससे पर्व-त्यौहारों के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी और वे इसे वैज्ञानिक ढंग से समझ सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना :- संताल जनजाति के पर्व-त्यौहार एवं आभूषण

- इस पत्र के उत्तर हिंदी व अँग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. संताल जनजाति में पर्व की अवधारणा, परिभाषा, सोहराय, जतरा, बाहा, करम, नवाजोम, दसंय, टुसु, की अवधारणा, मान्यताएं एवं लोक विश्वास, विधि-विधान, विशेषताएं एवं महत्व।

इकाई 2. पारम्परिक आभूषण - सुद्पसि, चांवरिज्, फीता, फुलि, लुलुक, मकड़ी, माला, कानफूल, मंदली, सांका, चुड़ी, मेड़ेंद् सकोम, कारलाफुलि, बाजु, मुदम, खड्डुआ, मोंहोर, पोला, बेरा, डंडागुलसी, इत्यादि की बनावट एवं प्रयोग।

इकाई 3. संताल जनजाति के पर्व-त्यौहारों में आधुनिकता का प्रभाव, संरक्षण के उपाय, भविष्य की उपादेयता।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. झारखण्ड के पारम्परिक आभूषण : डॉ. अंजुलता कुमारी
2. आदि धरम : डॉ. रामदयाल मुण्डा
3. म्युजिकल कल्चर ऑफ मुण्डारी ट्राइब : सेम तोपनो
4. पर्व-त्योहार, मेले और पर्यटन : संजय कृष्ण
5. विषय संबंधित विभिन्न पत्र-पत्रिकाएं

MINOR COURSE- MN - D

भारत की जनजातीय संस्कृति

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **60 Hours**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. भारत की जनजातीय संस्कृति पत्र के अंतर्गत विद्यार्थियों को जनजाति की परिभाषा, संकल्पना, जनजातियों के सामाजिक संस्थाओं, जनजातियों की विविध संस्कृति, सामाजिक संस्थाओं आदि की जानकारी दी जायेगी।
2. उनके बीच जनजातियों के समस्याओं को विश्लेषण कर उनमें समाधान के विकल्प को तलाशना एवं जनजातियों के विकास एवं संरक्षण के लिए लागू सरकारी योजनाएं, कार्यक्रमों की जानकारी उपलब्ध कराना।

प्रस्तावित संरचना :- भारत की जनजातीय संस्कृति

- इस पत्र के उत्तर हिंदी व अँग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. भारत में जनजातियों को उद्भव एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, जनजाति की परिभाषा एवं संकल्पना, जनजातियों का वर्गीकरण, जनजातीय प्रशासन का इतिहास, जनजातियों की सामाजिक संस्थायें (परिवार तथा नातेदारी, आर्थिक संगठन, राजनैतिक संगठन, युवागृह, अखड़ा)।

इकाई 2. जनजातीय समस्यायें एवं समाधान के उपाय, जनजातियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन, जनजातीय योजनायें, कार्यक्रम तथा उनका कार्यान्वयन, समकालीन चुनौतियाँ एवं उपाय।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. जनजातीय भारत : नदीम हसनैन
2. भारत में आदिनिवासियों का इतिहास : एच. लाल
3. झारखण्ड के आदिवासी : डॉ. जियाउद्दीन अहमद
4. झारखण्ड की जनजातियाँ : बिमला चरण शर्मा, कीर्ति विक्रम

MN-E

संताली लोक साहित्य

Marks: 25 (5 Attd. + 20 SIE: 1Hr) + 75 (ESE: 3Hrs) = 100	Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **60 Hours**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

3. इस पत्र के अंतर्गत संताल समुदाय के बीच आदि काल से मौखिक रूप से विरासत के रूप में प्रचलित पारंपरिक एवं साहित्यिक ज्ञान से अवगत कराना।
4. इसके अलावे विद्यार्थियों को संताली लोक साहित्य की संरचना, इसकी विशेषताओं एवं महत्व से अवगत कराना ताकि मौखिक रूप संचालित सामाजिक विरासत, पारंपरिक ज्ञान एवं इतिहास को संरक्षित किया जा सके।

प्रस्तावित संरचना :- संताली लोक साहित्य

- इस पत्र के उत्तर संताली भाषा व देवनागरी लिपि में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. संताली लोक साहित्य की अवधारणा, संताली लोक साहित्य की परिभाषा, क्षेत्र विस्तार, संताली लोक साहित्य का वर्गीकरण, संताली लोक साहित्य की विशेषताएं एवं महत्व।

इकाई 2. संताली लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोकसुभाषित का सामान्य परिचय, उत्पत्ति, इतिहास, परम्परा, वर्गीकरण, विशेषताएं एवं महत्व, सामाजिक जीवन में लोक साहित्य की महत्ता।

इकाई 3. संतालों में लोक विश्वास की अवधारणा, धार्मिक लोक विश्वास, देवी-देवता संबंधी लोक विश्वास, मानव और जगत् संबंधी लोक विश्वास, भूत-प्रेत संबंधी लोक विश्वास, जादू-टोना, सामाजिक लोक विश्वास, प्रकृति संबंधी लोक विश्वास, नीति परक लोक विश्वास, लोक विश्वास का सामाजिक महत्व।

अनुशंसित पुस्तकें :-

7. संताली लोकगीतों में साहित्य एवं संस्कृति : डॉ. रतन हेम्ब्रम
8. होड़ काथा आर भेन्ता काथा : धीरेन्द्र नाथ बास्के
9. संताली लोकगीत और जीवन दर्शन : रमेश हेम्ब्रम
10. नाहाक् लोककथा संग्रह : सुशील हेम्ब्रम
11. होड़ क़ाहनीको : पी. ओ. बोडिंग
12. संताली होड़ सांवहेत् : डॉ. के. सी. टुडू

MN-F

पारम्परिक वाद्य यंत्र, गीत एवं नृत्य शैलियाँ

Marks: 25 (5 Attd. +20 SIE: 1Hr) +75 (ESE: 3Hrs) = 100 Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **60 Hours**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :-

1. विद्यार्थी अपनी जाति की पारंपरिक वाद्य यंत्र, गीत एवं नृत्य से परिचित होंगे।

2. विद्यार्थी वाद्य यंत्र में उपयोग की जाने वाले सामग्री के बारे में जान पायेंगे।

3. विद्यार्थी सभी प्रकार के गीत के राग एवं नृत्य शैली को अपने जीवन में उतार सकेंगे।

4. विद्यार्थी इन सभी चिजों की विशेषता और महत्व को जान सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई

- 1 बनावट, प्रकृति, आकार-प्रकार (मांदर, नगाड़ा, ढोल, रूतु, बनम, सेकोःए, करताल, चयोम, गिनी, सकोवों, घंटा, भेर, नरसिंघा, झांझ, ठेचका, रबका, टुहिला, ढाक, गुगुरा)

इकाई- 2 नृत्य की परिभाषा, प्रकार, महत्व, विशेषता एवंपारम्परिकआभूषण

इकाई-

3 नटुआ, छऊ, पईका, घोड़ानाच, जदुर, करम, सरहुल, गेना, जतरा, केमटा, झुमइर, लहसुआ, भिनसरिया, डमकचनृत्य, दोङ लांगड़े

सहायक ग्रंथ :

* झारखण्ड के वाद्य यंत्र	डॉ. गिरिधारी राम गौझू 'गिरिराज'
* झारखण्ड के लोकसंगीत	डॉ. गिरिधारी राम गौझू 'गिरिराज'
* झारखंड इन्साइक्लोपीडिया, भाग-4:	रणेन्द्र कुमार
* दोङ सेरेञ	भागवत मुर्मू

MN-G

झारखण्डी समुदाय का सांस्कृतिक केन्द्र एवं झारखण्डी पाक् कला

Marks: 25 (5 Attd. +20 SIE: 1Hr) +75 (ESE: 3Hrs) = 100 Pass Marks: Th (SIE + ESE) = 40

(Credits: Theory-04) **60 Hours**

निर्देश: इस पत्र का उत्तर हिन्दी/अंग्रेजी भाषा में अपेक्षित होंगे।

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :-

1. विद्यार्थी जनजातियों के युवागृह से परिचित होंगे ।

2. जनजातियों की सामाजिक व्यवस्था में युवागृह के महत्व से भी परिचित होंगे।

3. विद्यार्थी सामाजिक सांस्कृतिक केन्द्र एवं झारखण्डी पाक् कला के बारे में परिचित होंगे।

4. विद्यार्थी सभी प्रकार के जनजातीय पाकवानों से परिचित होंगे।

5. विद्यार्थी सभी प्रकार के जनजातीय युवागृहों से परिचित होंगे।

6. विद्यार्थी रोग निरोधक पाकवानों से परिचत होंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई 1 गितिःओड़ाः, गितिः ओअ, धुमकुड़िया, गिता'चाड़ी, गिपितिच् टाँडी, माँझी आखड़ा, सुतानटांडी, आतूबैसी

इकाई- 2 अखडा-परिभाषा, सामाजिक महत्व एवं विशेषता

इकाई - 3 मडुआ रोटी, मकई-सरई-महुआ लाठो, धुसका, खपरा रोटी, सकमलद्, दुललद्, छिलका रोटी, डुम्बुः, मीट मछली पकाने की कला, लद् जिलु, लेटेमंडि, गुड़ पीठा, अरसा रोटी, गिल पिठा, मातकोम तिकी।

सहायक ग्रंथ :

* झारखण्ड की सांस्कृतिक विरासत : डॉ. गिरिधारी राम गौझू 'गिरिराज'

* झारखण्ड की पारम्परिक कलाएँ : डॉ. गिरिधारी राम गौझू 'गिरिराज'

* झारखण्ड के सदानों का इतिहास : डॉ. वीरेन्द्र कुमार साहु

* भारतीय जनजातीय संस्कृति : गया पाण्डेय:

* सामाजिक मानवशास्त्र परिचय मजुमदार एवं मदन

* सामाजिक सांस्कृतिक मानवशास्त्र : विजय शंकर उपाध्याय, गया पाण्डेय

AEC-3 SANTALI ELECTIVE - 1

लेखन एवं प्रारूपण

Marks: 50 (ESE: 1.5 Hrs) = 50	**Pass Marks: Th (SIE) = 20**

(Credits: Theory-02) **30 Hours**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में लेखन के प्रति रूचि जगेगी।
2. उनमें लेखन कौशल का विकास होगा। इसके साथ ही अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने में भी मदद मिलेगी।
3. भाषा में रूचि एवं मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने में मदद मिलेगी।
4. कार्यालय से संबंधित विभिन्न प्रकार के पत्र व्यवहार किस प्रकार किये जाते हैं? संपादकीय लेखन कैसे लिखा जाना है? विद्यार्थियों के अंदर इसको विकसित मूल उद्देश्य है। इसके साथ ही प्रारूपण क्या है? प्रारूप लिखने के लिए किन-किन नियमों का पालन किया जाता है?
5. सैद्धांतिक पक्षों की जानकारी प्राप्त होगी।

प्रस्तावित संरचना :- लेखन एवं प्रारूपण

- इस पत्र के उत्तर हिंदी व अँग्रेजी में अपेक्षित होंगे।

इकाई 1. लेखन का परिचय, लेखन कौशल का विकास एवं महत्व, पत्र लेखन, कार्यालयी पत्र-व्यवहार, संपादकीय पत्र लेखन, आवेदन लेखन।

इकाई 2. प्रारूपण का अर्थ, प्रारूप लेखन की अवधारणा, प्रारूप लिखने के नियम, प्रारूपण की विशेषताएं, प्रारूप लेखन के प्रकार।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. रचनात्मक लेखन : रमेश गौतम (संपादक)
2. साहित्य चिंतनः रचनात्मक आयाम : रघुवंश
3. पत्रकारी लेखन के आयाम : मनोहर प्रभाकर
4. सरकारी पत्र एवं दस्तावेज लेखन विधि : आविद रिजवी

AEC-4 SANTALI ELECTIVE - 2

संताली वाक् कला एवं सम्प्रेषण

Marks: 50 (ESE: 1.5 Hrs) = 50	Pass Marks: Th (SIE) = 20

(Credits: Theory-02) **30 Hours**

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगा :-

1. छात्रों को भाषा का ज्ञान कराना ।
2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में भाषा संप्रेषण कौशल विकास होगा।
3. उन्हें भाषा संप्रेषण के विभिन्न माध्यमों से परिचय प्राप्त होगा।

प्रस्तावित संरचना :- संताली वाक् कला एवं सम्प्रेषण

इकाई 1. भाषा संप्रेषण का अर्थ, संप्रेषण की अवधारणा, संप्रेषण की परिभाषाएं, संप्रेषण का स्वरूप, संप्रेषण के प्रकार, संप्रेषण का तकनीकी पक्ष, संप्रेषण का सामाजिक परिप्रेक्ष्य, भाषा शिक्षण में संप्रेषण का महत्व, संप्रेषण के उद्देश्य।

इकाई 2. संचार, दूर संचार (टेलीफोन, रेडिया, दूरदर्शन), जन संचार (हाट-बाजार, मेला आदि), मिडिया (प्रिंट मिडिया, इलेक्ट्रॉनिक मिडिया)।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. सरकारी पत्र एवं दस्तावेज लेखन विधि : आविद रिजवी
2. संक्षेपण और पल्लवन : कैलाश चन्द्र भाटिया, तुमन सिंह